16

आदमी जिसने खुशी की खबर दूसरों को दी

(2 राजाओं 7:3–16)

पिछला एक पाठ अरामियों द्वारा सामरिया को घेरे जाने के गिर्द घूमता था। भोजन की कमी होने पर नगर के लोग निराश हो गए। भोजन की तलाश के अपने आपे से बाहर किए गए प्रयासों में उन्होंने परमेश्वर और प्रकृति दोनों का पाप किया। भूख से मर रहे लोगों में चार कोढ़ी थे। यह पाठ उन चार व्यक्तियों पर केन्द्रित है, मैं इस पाठ को ''आदमी जिसने खुशखबरी दूसरों को दी'' का नाम दे रहा हूं। उनकी कहानी की समीक्षा करते हु हम उस जिम्मेदारी पर ज़ोर देंगे जो आज शुभ समाचार लोगों को देने की आपकी ओर मेरी है।

उस समय खुशी की खबर (7:3-16)

उनके लिए खुशी की खबर

''और चार कोढ़ी[1] फाटक के बाहर थे'' (आयत 3क)। नामान पर अपने पाठों में हम ने कोढ के भयानक रोग की चर्चा की थी। इस्राएल में कोढ़ियों को कसबों और नगरों के भीतर जाने की अनुमति नहीं थी (देखें लैव्यव्यवस्था 13:46; गिनती 5:2, 3)। ये चारों इस उम्मीद से कि आने जाने वाले लोग उन्हें बचा हुआ भोजन डाल देंगे फाटक के पास रहते होंगे। परन्तु अब उन्हें दिया जाने के लिए कोई भोजन नहीं था। नगर के भीतर रहने वालों की तरह ही कोढ़ी भी भूख से मर रहे थे।

चारों ने सलाह की: ''हम क्यों यहां बैठे बैठे मर जाएं?'' (2 राजाओं 7:3ख)। उन्हें *कुछ* करना आवश्यक था और यह *शीघ्र* किया जाना था। ''यदि हम कहें, 'नगर में जाएं,' तो वहां मर जाएंगे; क्योंकि वहां अकाल पड़ा है'' (आयत 4क)। यदि वे शहरपनाह के भीतर किसी न किसी तरह चले भी जाते तौभी परिस्थिति बदलनी नहीं थी। परन्तु वहां रहना जहां वे थे निश्चित मौत थी (आयत 4ख)।

अन्त में कोढ़ियों ने निर्णय लिया, ''तो आओ हम अराम की सेना में पकड़े जाएं; यदि वे हम को जिलाए रखें तो हम जीवित रहेंगे, और यदि वे हम को मार डालें, तौभी हम को मरना ही है'' (आयत 4ग)। अन्य शब्दों में, ''हमारे साथ सबसे बुरा वह यही कर सकते हैं कि वह हमें मार डालेंगे, और मरना तो हमें है ही। भूख से तिल तिल कर मरने से अच्छा यही है कि तलवार से एक ही झटके में मार डाले जाएं। दूसरी ओर, क्या पता? हो सकता है कि वे हमें कैदी बना लें और खाना खिलाते रहें।''

इस प्रकार ''वे सांझ को अराम की छावनी में जाने को चले'' (आयत 5क)। लेखक अनुमान लगाते हैं कि यह लोग सांझ को क्यों गए, परन्तु शायद इसकी व्याख्या आसान है कि निर्णय पर पहुंचकर उन्होंने तुरन्त कार्य किया।

कोढ़ी घबराए हुए होंगे। किसी भी पल उन्हें यह आवाज़ सुनाई पड़ सकती थी, ''रुको! उधर कौन जा रहा है?'' वे ज़मीन पर पटके जाने और दया की भीख मांगने के लिए तैयार थे।

उनके छावनी की ओर बढ़ने पर डेरे में से शोर शराबा सुनाई दे सकता है (देखें आयत 7क) परन्तु जब वे वहां पहुंचे तो खामोशी थी (देखें आयत 10)। ''अराम की छावनी की छोर[2] पर पहुंचकर क्या देखा, कि वहां कोई नहीं है'' (आयत 5ख)। उनके इस प्रकार से झांकने की कल्पना करें और वह भी अंधेरे में। शायद कोढ़ियों को लगा, जैसा बाद में राजा ने किया (देखें आयत 12), कि यह एक चाल है; परन्तु वहां सचमुच में कोई नहीं था। छावनी उजाड़ हो गई थी।

''क्योंकि प्रभु ने अराम की सेना को रथों और घोड़ों की और भारी सेना की सी आहट सुनाई थी'' (आयत 6क)। कई टीकाकारों ने इसे यह बताने के लिए कि प्रभु ने उनके साथ यह *कैसे* किया, उनकी जिम्मेदारी माना था। इस घटना को प्राकृति बात ''बताने'' के भी कइयों ने प्रयास किए हैं। विश्वासियों के लिए इतना जानना ही काफ़ी है कि अरामियों को शोर सुनाने और यह कि वह अनुभव पूरी तरह से विश्वास करने योग्य था *परमेश्वर* ज़िम्मेदार है। ''प्रभु ने दृश्य के एक आश्चर्यकर्म के द्वारा मोआबियों को पराजित किया था'' ([2 राजाओं] 3:20-23) और अब उसने शोर के आश्चर्यकर्म के द्वारा [अरामियों] को ''हराया।''[3]

जब सिपाहियों ने शोर सुना, तो उन्होंने कहा, ''सुनो, इस्राएल के राजा ने हित्ती और मिस्री राजाओं[4] को वेतन पर बुलवाया है कि हम पर चढ़ाई करें'' (आयत 6ख)। ''हित्ती'' लोग हित्ती साम्राज्य के पतन के बाद उठने वाले उत्तरी अराम के नगर राज्यों के वासियों को कहा गया है।[5] अरामियों ने तुरन्त यह निष्कर्ष निकाला कि इस्राएल के राजा से उत्तर की ओर से उन पर आक्रमण करने हित्तियों को और दक्षिणी से मिस्रियों को भोड़े पर लिया है।

आतंक से भरपूर सिपाही ''सांझ को उठकर ऐसे भाग गए [तभी जब कोढ़ी नगर से जाने लगे थे], कि अपने डेरे, घोड़े, गदहे, और छावनी जैसी की तैसी छोड़-छाड़ अपना अपना प्राण लेकर भाग गए'' (आयत 7)। वे घोड़े की पीठ पर तेज़ी से नहीं चल पाए, इस कारण यह तथ्य कि उन्होंने अपने घोड़े छोड़ दिए इस बात का संकेत देता है कि वे कितने आतंकित हुए होंगे।

सावधानी बरतते हुए कोढ़ी छावनी में गए (आयत 8क)। उन्होंने जलती हुई आग और बंधे हुए जानवरों को देखा (देखें आयत 10) पर किसी मनुष्य को नहीं। एक तम्बू में घुसने पर उन्हें तैयार किया हुआ भोजन मिला जिसे उन्होंने खाया पिया (आयत 8ग); खाना संभवतया इतना स्वादिष्ट नहीं होगा; फिर ''चांदी सोना और वस्त्र'' ढूंढ़ते हुए उन्होंने खज़ाना लूटा और छुपने का स्थान ढूंढ़ने के लिए अंधेरे में ले गए। वे एक से दूसरे तम्बू में इधर-उधर जाकर हर चीज़ को लूट रहे थे (आयत 8घ)। अब वे भिखारी नहीं बल्कि धनवान बन चुके थे।

दूसरों के लिए खुशी की खबर

थोड़ा बाद में उनके विवेक ने झंझोड़ा। उन्होंने एक और सभा की। ''जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह आनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते'' (आयत 9क)। उनके पास इतना भोज था कि वे जितना चाहे खा सकते थे और उसमें भी बच सकता था पर नगर के लोग अभी भी भूखे मर रहे थे।

चर्चा में एक व्यावहारिक बात जोड़ी गई थी: ''जो हम पौ फटने तक ठहरे रहें तो हम को

दण्ड मिलेगा'' (आयत 9ख)। यह एक तर्कसंगत निष्कर्ष था। सुबह होने पर संतरियों ने देखना था कि शत्रु भाग गया है और अन्तत: लोगों को पता चल जाना था कि कोढ़ियों ने यह खबर अपने तक ही रखी थी। दण्ड मिलना निश्चित था, लोगों से भी, राजा से भी और परमेश्वर से भी।

बहुत पहले मैंने एक प्राचीन शिक्षा के बारे में पढ़ा था जो इस प्रकार से थी: यदि किसी को किसी अच्छी चीज़ का पता हो जिससे उसके पड़ोसी को लाभ मिल सकता है और वह उसे अपने पास रखता है, तो वह व्यक्ति चोरी करने का दोषी है। उदाहरण के लिए मान लें कि किसी आदमी को पता है कि उसके पड़ोसी को अपने परिवार के लिए भोजन चाहिए। यह भी मान लें कि उस आदमी को मालूम है कि उसके पड़ोसी को आटे की बोरी मुफ्त कहां मिल सकती है पर वह इसके बारे में बताता नहीं है। ऐसे मामले में उस आदमी को बिल्कुल उसी तरह अपने पड़ोसी से आटे की बोरी चुराने का दोष माना जाएगा जैसे उस ने उसके घर में जाकर वह बोरी उठाई हो। यदि कोढ़ी सामरिया के लोगों को उस उपलब्ध भोजन के बारे में न बताते तो उन्हें चोर समझा जा सकता था।

उन्होंने निर्णय लिया, ''सो अब आओ हम राजा के घराने के पास जाकर यह बात बतला दें'' (आयत 9ग)। वे फाटक के बाहर जाकर पहरेदारों को ज़ोर ज़ोर से पुकारकर बताने लगे कि उन्हें आरामी छावनी में क्या मिला है (आयत 10)। पहरेदारों ने यह संदेश महल तक पहुंचा दिया (आयत 11)।

सहायकों ने राजा को जगाया (देखें आयत 12क) और उसे खबर दी। यह सराहनीय बात होती अगर वह इसका उत्तर यह कहकर देता, ''तो एलीशा की भविष्यवाणी *इस* [7:1] प्रकार से पूरी होगी।'' इसके बजाय उसे लगा कि यह खबर ''कोरी बकवास है।'' उसने अपने सेवकों को बताया, ''मैं तुम्हें बताता हूं कि अरामियों ने हम से क्या किया है। वे जानते हैं कि लोग भूखे हैं, इस कारण वे छावनी में से मैदान में छिपने को यह कहकर गए हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे, तब हम उन को जीवित ही पकड़कर नगर में घुसने पाएंगे'' (2 राजाओं 7:12ख)। यहोशू ने ऐ नगर कोपराजित करने के लिए ऐसी ही चाल चली थी (यहोशू 8)।

राजा के सेवकों में से एक ने सुझाव दिया कि राजा को कम से कम पता तो लगा लेना चाहिए कि यह कहानी सच्ची है या नहीं। सेवक ने कहा, ''जो घोड़े नगर में बच रहे हैं उन में से लोग पांच घोड़े लें, और उनको भेजकर हम हाल जान लें'' (2 राजाओं 7:13क)। यह मानते हुए कि नगर में अधिकतर घोड़े मर चुके थे (और सम्भवतया खा लिए गए थे) सेवक ने आगे कहा, ''वे [भेजे गए आदमी] तो इस्राएल की सब भीड़ के समान हैं जो नगर में रह गए हैं वरन इस्राएल की जो भीड़ मर मिट गई है वे उसी के समान हैं'' (आयत 13ख)। मूल रूप में वह कह रहा था, ''उन भेजे गए लोगों के साथ जो सबसे बुरी बात हो सकती थी वह यह है कि वे मारे जाएंगे। यदि वे नगर में रहेंगे, फिर भी तो मारे ही जाएंगे, तो फिर क्यों न उन्हें भेज दिया जाए? इसमें खोना क्या और पाना क्या?''

अन्त में ''दो रथ और उनके घोड़े'' (आयत 14) भेजने का निर्णय लिया गया। रथवानों ने छावनी को खाली पाया, वैसे ही जैसे कोढ़ियों ने कहा था, उन्होंने भाग जाने वाले अरामियों के रास्ते का पीछा किया, यानी उस रास्ते का जो उनके पीछे निशान पड़ गया था, पीछा किया जो यरदन नदी तक जाता था।[6] ''तब वे यरदन तक उनके पीछे चले गए, और क्या देखा, कि

पूरा मार्ग वस्त्रों और पात्रों से पसरा पड़ा है, जिन्हें आरामियों ने पतावली के मारे फैंक दिया था'' (आयत 15क)।

दूतों ने लौटकर राजा को बताया (आयत 15ख)। तुरन्त यह बात पूरे नगर में फैल गई और शीघ्र ही फाटक खुल गए, ''तब लोगों ने निकलकर अराम के डेरों को लूट लिया'' (आयत 16क)। उन्होंने खाया और तृप्त हुए क्योंकि उन्हें दिया गया था। उनके कुछ कार्य का जिम्मेदार प्रभु था, परन्तु उस ने अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए चार नापसन्द पात्रों यानी चार कोढ़ियों का इस्तेमाल किया जो अच्छी खबर दूसरों के साथ बांटने के लिए तैयार नहीं थे।

खुशी की खबर का मार्ग

कई प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं परंतु मैं आयत 9 में कोढ़ियों के शब्दों पर अपने विचारों को केन्द्रित रखूंगा।''तब वे आपस में कहने लगे, जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है, यह आनन्द के समाचार का दिन है, परन्तु हम किसी को नहीं बताते। जो हम पह फटने तक ठहरे रहें तो हम को दण्ड मिलेगा; इसलिए आओ हम ... जाकर यह बात बतला दें।'' कोढ़ियों की और हमारी परिस्थिति में समानताएं बनाई जा सकती हैं।

हमारे लिए खुशी की खबर

कोढ़ियों की बात में जो पहली बात हमें चोट करती है वह यह है ''आनन्द का समाचार'' वाक्यांश है। हमें स्मरण आता है कि ''सुसमाचार'' शब्द का मूल अर्थ ''शुभ समाचार'' है। सुसमाचार का सार मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने की कहानी है (1 कुरिन्थियों 15:1-4)। हम आज भी कह सकते हैं, ''यह आनन्द के समाचार का दिन है'' क्योंकि हम खोए हुए थे, पर यीशु ने अपने ऊपर हमारे पापों को उठा लिया और हमारी ओर से मर गया (1 कुरिन्थियों 15:3; 2 कुरिन्थियों 5:21; यशायाह 53:6)! कोढ़ियों के पास शारीरिक लाभों को बताने के आनन्द का समाचार था जबकि हमारे पास आत्मिक आशिषें बांटने का शुभ समाचार है।

कई समानताएं बनाई जा सकती हैं हम संसार के पाप से ''घिरे'' होने पर विचार कर सकते हैं (देखें इफिसियों 6:12)। मसीह के बिना लोग आत्मिक रूप में बिना आशा के और ''भूखे मर रहे'' हैं (देखें इफिसियों 2:12)। परन्तु अपने अनुग्रह के द्वारा परमेश्वर ने मनुष्य जाति को बचाने के लिए साधन उपलब्ध करवाया है (देखें तीतुस 3:4, 5क; प्रेरितों 2:38)। यीशु के द्वारा हर व्यक्ति पाप के ऊपर विजय पा सकता है (1 कुरिन्थियों 15:56, 57)। आत्मिक आशिषों का ''बोझ'' सब के लिए किया गया है जो उसमें भाग लेने के इच्छुक हैं (देखें मत्ती 22:9)।

उन चार कोढ़ियों की तरह हम ने जो लोग प्रभु की कलीसिया के लोग हैं वे परमेश्वर के उपाय का आनन्द ले रहे हैं। हम ''भुखमरी'' से ''तृप्त'' होने तक चले गए हैं (देखें मत्ती 5:6)। हम आत्मिक ''भिखारी'' होने से ''धनवान'' बनने तक चले गए हैं (2 कुरिन्थियों 6:10; मत्ती 5:3)। हमें कितनी अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं और आशिषें मिली हैं (देखें इफिसियों 3:20; फिलिप्पियों 4:19; इब्रानियों 7:25)।''परमेश्वर को उसके उस दान के लिए जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो'' (2 कुरिन्थियों 9:15)। यह दान उसके अपने पुत्र का है!

दूसरों के लिए खुशी की खबर?

हमारे सामने सवाल यह है कि क्या हम जो कुछ हमारे पास है उसकी आवश्यकता को संसार के लिए होने को समझते हैं? यदि हम पाप में खोए हुओं के पास खुशी की खबर बांटने में नाकाम रहते हैं, तो उन कोढ़ियों की तरह हमें भी कहना होगा कि ''जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है।''

अफ़सोस की बात है कि हम ने हमेशा दूसरों को यीशु का शुभ समाचार बताया नहीं। मुझे नहीं मालूम कि ऐसा क्यों है। ऐसा हो सकता है कि कइयों ने सचमुच में ''यदि तुमने प्रभु की कृपा का स्वाद चखा'' नहीं है (1 पतरस 2:3)। यानी वे स्वयं भी अभी तक बचाए नहीं गए हैं। अंद्रियास को प्रभु जैसे ही मिला था वैसे ही वह दूसरों को बताने के लिए भागा था (यूहन्ना 1:40-42); यह स्वभाविक प्रतिक्रिया है। यदि किसी को शुभ समाचार को बांटने की आवश्यकता महसूस नहीं होती तो उसे प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध की समीक्षा कर लेनी चाहिए।

एक और सम्भावना यह है कि हम में से कई लोग जो कुछ प्रभु ने उनके लिए किया है उसके लिए पूरी तरह से आभारी नहीं हैं (देखें 2 पतरस 1:9ख)। यदि हम सचमुच में धन्यवाद करने वाले हैं कि हम उस समाचार को दूसरों मेें अवश्य बांटना चाहेंगे (देखें लूका 8:39)!

कई बार शुभ समाचार न बता पाना दूसरों के लिए लगाव की कमी का संकेत देता है। यदि हमें मालूम होता कि हमारे पड़ोसी शारीरिक भूख से मर रहे हैं, तो सम्भवतया हम में से कोई भी इतना निर्दयी नहीं होगा कि उन्हें खाना देने से इनकार करे। हो सकता है कि हमारे आस-पास के लोग शारीरिक भोजन के न होने से न मर रहे हों पर वे आत्मिक रूप में ''मर रहे हो'' हैं। यदि हम उनके पास वचन का ''दूध'' और ''मांस'' नहीं ले जाते हैं (1 पतरस 2:2; इब्रानियों 5:12; KJV), तो यह हमारे विषय में क्या कहता है? सचमुच, ''जो हम कर रहे हैं वह अच्छा काम नहीं है।''

एक समस्या यह हो सकती है कि किसी न किसी तरह हम ने मसीहियत की आत्मा को खो दिया है। आरम्भिक मसीही हर किसी से जो उनसे मिलता था शुभ समाचार को बांटने के लिए उपस्थित रहते थे (देखें प्रेरितों 5:42; 8:1, 4)। ऐसा करते हुए वे प्रभु की आज्ञा को पूरा कर रहे हैं (मत्ती 28:18-20; देखें 10:27)।

यीशु के विषय में दूसरों को बताने के हमारे पास ढेरों कारण हैं, जिसमें खोए हुओं के लिए हमारा प्रेम और अपने प्रभु की आज्ञा मानने की हमारी इच्छा शामिल है। हम उस कारक को भी तोड़ सकते हैं जिसने कोढ़ियों को परेशान किया: ''जो हम ... ठहरे रहें तो हम को दण्ड मिलेगा।'' यहेजकेल 3:18 में प्रभु की यह गम्भीर बात मिलती है: ''जब मैं दुष्ट से कहूं, 'तू निश्चय मरेगा,' और यदि तू उसको न चिताए, और न दुष्ट से ऐसी बात कहे जिससे कि वह सचेत हो ओर अपना दुष्ट मार्ग छोड़कर जीवित रहे, तो वह दुष्ट अपने अधर्म में फंसा हुआ मरेगा, परन्तु उसके खून का लेखा मैं तुम ही से लूंगा।''

सचमुच में यह ''आनन्द के समाचार का दिन'' है! कालांतर के विषय में हमें मानना पड़ सकता है कि हम ने सही काम नहीं किया क्योंकि हम खामोश रहे; परन्तु भविष्य के विषय में, आओ हम कोढ़ियों के शब्दों को स्वर दें कि ''अब आओ हम जाकर यह बात बतला दें''!

सारांश

यह पाठ मसीही लोगों के लिए है, यानी हम में से हर किसी को शुभ समाचार को यानी सुसमाचार को बांटने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए। परन्तु अन्त में मैं किसी के लिए भी जिसने प्रभु के उपाय का अभी तक लाभ नहीं उठाया है इसे लागू करना चाहूंगा। नगर के बाहर बैठे धूप से मर रहे कोढ़ियों ने पूछा था, ''हम क्यों यहां बैठे-बैठे मर जाएं?'' (2 राजाओं 7:3)। मैं वैसा ही सवाल पूछना चाहता हूं जो उन्होंने पूछा था: ''आप वहां क्यों बैठे हैं, बिना हिले और डोले, हर सांस के साथ जो आप लेते हैं मृत्यु के निकट, और निकट जाते हुए?'' मैं अपने पूरे मन से यह प्रार्थना करता हूं कि आप मृत्यु तक वहां बैठे न रहें! यदि आप यीशु में विश्वास रखते हैं (यूहन्ना 3:16) और अपने पापों से मन फिरा लिया है (लूका 13:3), तो जिस प्रकार हनन्याह ने शाऊल से कहा था, मैं भी आपसे कहता हूं, ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर पापों को धो डाल'' (प्रेरितों 22:16)!

टिप्पणियां

[1]बाइबल से बाहर की एक यहूदी परम्परा कहती है कि ये गेहेजी और उसके तीन पुत्र (एडम क्लार्क, *दि होली बाइबल विद ए कमैंट्री एंड क्रिटिकल नोट्स,* अंक 2, *जोशुआ-एस्तर* [न्यू यॉर्क: अबिंग्डन-कोक्सबरी प्रैस, तिथि नहीं], 504; मैथ्यू हेनरी, *कमैंट्री ऑन द होल बाइबल,* संपा. लेसली एफ. चर्च [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1961], 409)। [2]''छोरे'' सामरिया नगर के सबसे निकट छावनी का किनारा यानी अरामियों की छावनी का सिरा होने का संकेत है। [3]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *बी डिस्टिकंट* (कोलोराडो स्प्रिंग्स, कोलोराडो: विक्टर, 2002), 55. [4]विद्वान यह अनुमान लगाते हैं कि यह मोटारी या मुज़ुर या कोई और जगह होनी चाहिए। जो भी अनुवाद मैंने देखा उस में ''मिस्री'' है। [5]जे. रॉबर्ट विनॉय, नोट्स और 2 किंग्स, *दि NIV स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 535. [6]सेना के पास अराम में वापस जाने के दो मार्ग थे: वे उत्तर में जाकर फिर पूर्व को जा सकते थे या वे यरदन के पार पूर्व में जाकर उत्तर में जा सकते थे। उन्होंने दूसरा रासता चुना।